(ग) वर्ष 1996–97 के लिए अनुमानित लागत में उपलब्ध करायी गई वार्षिक ब्याज की 980 करोड़ रु० की राशि की तुलना में 1991–92 में यह राशि 567 करोड़ रु० थी।

(घ) भाग (क) के उत्तर में दिए गए प्रक्षेपण के अनुसार उत्पादन लागत में लगभग अनुमानित गिरावट आठवीं योजना के अंतिम वर्ष में (1992–93 की कीमतों पर) 245.00 करोड़ रु० होगी।

भूमिगत और खुली खदानों से निकलने वाले कोयले की गुणवत्ता में अन्तर

6249. **प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा** : क्या कोयला मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि भूमिगत खानों से निकाले जाने वाले कोयले की गुणवत्ता खुली खदानों से निकाले जाने वाले कोयले की तुलना में बेहतर होती है ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह सच है कि कोयले के कुल उत्पादन का लगभग 70 प्रतिशत खुली खदानों से प्राप्त किया जा रहा है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण के बाद खुली खदानों से होने वाले कोयले के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हुई है ; और

(घ) यदि नहीं, तो वर्ष 1991–92, 1992–93 और 1993–94 के दौरान देश में खुली खदानों और भूमिगत खदानों से अलग-अलग कोयले की कितनी-कितनी मात्रा का उत्पादन किया गया है ?

कोयला मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अजित कुमार पांजा) : (क) और (ख) कोल इंडिया लि० ग्रुप की कंपनियों में कोयले का लगभग 70% उत्पादन ओपेनकास्ट खानों से किया जाता है। कोयले की निहित गुणवत्ता खनन प्रणाली पर निर्भर नहीं होती है नामतः ओपेन-कास्ट (ओ०का०) या भूमिगत (भू०ग०) पर, किन्तु भू-गत खनन में कोयले की गुणवत्ता का ह्रास ओपेनकास्ट खनन की तुलना में जहां कि यंत्रिकृत/एक मुश्त खनन अभियान के दौरान कोयले के साथ अवशिष्ट सामग्री मिल जाने के ज्यादा अवसर होते हैं। इस संबंध में किए गए अथक प्रयासों के बावजूद कोयले की खनन तथा रख-रखाव प्रक्रिया के दौरान कोयले से स्लेट, पत्थर, आदि को पूर्णतया पृथक करना संभव नहीं हो पाता है। किन्तु, अवशिष्ट सामग्री से मुक्त कोयले का प्रेषण सुनिश्चित करने के लिए कोयला कंपनियों ने निम्नलिखित कदम उठए हैं :–

(1) कोयले के लदान के समय पत्थरों को पृथक किया जा रहा है।

(2) हाथ से स्लेट तथा पत्थर के टुकड़े चुनने के लिए कोयला रख-रखाव संयंत्रों में धीमी चाल वाली पिकिंग बैल्ट उपलब्ध कराई जा रही है।

(3) लदान के समय कोयले की गुणवत्ता बनाए रखने तथा गुणवत्ता विकसित करने के लिए कामगारों, पर्यवेक्षकों तथा अधिकारियों में जागरूकता सुनिश्चित करने के लिए उचित पर्यवेक्षण किया जा रहा है।

यह सच है कि इन वर्षों के दौरान ओपेनकास्ट खानों के उत्पादन में वृद्धि हुई है।

(ग) और (घ) वर्ष 1991–92, 1992–93 और 1993–94 के दौरान ओपेनकास्ट तथा भू-गत खानों में हुए

कोयले के उत्पादन का ब्यौरा नीचे दिया गया है :–

(मिलियन टन)

आंकड़ें अनंतिम

वर्ष	भू-गत खान से उत्पादन	ओपेनकास्ट खान से उत्पादन	जोड़
1991–92 . . .	73.49	155.79	229.28
1992–93 . . .	74.90	163.36	238.26
1993–94 . . .	76.44	169.60	246.04

Plans after exhausting coal reserves

6250. SHRI RAMNATH GOVIND:

Will the Minister of COAL be pleased to state:

(a) whether Government are aware that the coal reserves/deposits in the country will not last beyond the next 4—5 decades;

(b) whether Government have worked out any action plan to meet the situation after exhausting of coal deposits or for substitute thereof; and

(c) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF COAL (SHRI AJIT KUMAR PANJA): (a) to (c) The coal reserves in the country as on 1-1-1994 have been assessed at 196891.87 million tonnes. These are likely to last over 100 years even at enhanced rate of production to meet the future demand.

Safety audit in CIL and SCM

6251. SHRI DILIP SINGH JUDEV: Will the Minister of COAL be pleased to state:

(a) whether there is any concept of regular safety audit in Coal India Limited;

(b) if so, the details thereof;

(c) what is the safety budget of Coal India Limited and Singreni Coal Mines;

(d) whether it is a fact that a lot of accidents have taken place in the opencast mines of Coal India on the surface;

(e) if so, what steps Coal India has taken to eliminate accidents especially with regard to slops stability. accidents due to machinery etc.;

(f) wheher it is also a fact that the lighting standard in the opencast mines and at the railway siding of Coal India Limited are very poor as compared to standard of lighting in the opencast mines and the railway sidings of TISCO; and

(g) why Coal India cannot improve this aspect?